Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

सिरपुर की मृद्भाण्ड परम्परा

सौरभ सिंह
शोध छात्र, डक्कन कालेज, पुणे, महाराष्ट्र, भारत।
चन्द्रशेखर सिंह
शोध छात्र, डक्कन कालेज, पुणे, महाराष्ट्र, भारत।

शोधसारांश – सिरपुर उत्खनन से प्राप्त पात्रों के निर्माण में आस–पास में उपलब्ध मिट्टी का ही प्रयोग किया गया है जिसमें बालू मिश्रण भी हुआ है। प्राप्त पात्र खण्डों में अधिकांशतः विभिन्न आकार–प्रकार के संग्रह पात्र, घड़े, बेसिन, हांडी, कटोरे आदि प्रमुख है। इनके अध्ययन से यह आभासित होता है कि संग्रह के लिए पात्रों का प्रयोग ज्यादा होता था। जिसमें संभवतः तरल एवं ठोस पदार्थों का संग्रह किया जाता रहा होगा। बहुत स्पष्ट जानकारी इसलिए उपलब्ध नहीं है क्योंकि इन पात्र खण्डों का वैज्ञानिक अध्ययन अभी भी शेश है।
मुख्य शब्द– सिरपुर, मृद्भाण्ड, उत्खनन, पात्र, मिट्टी, वैज्ञानिक।

सिरपुर अथवा श्रीपुर (21° 20′ 49.71′′ उत्तरी अक्षांश 82° 10′ 58′′ पूर्वी देशान्तर) रायपुर से लगभग 85 कि.मी. उत्तर–पूर्व में राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 53 (रायपुर–सम्बलपुर) पर महासमुन्द जिले के अन्तर्गत महानदी के दाहिने तट पर स्थित है। सिरपुर अर्थात वैभव की नगरी, आज भी सिरपुर में अवस्थित स्मारकों एवं लगभग 10 वर्ग कि.मी. परिक्षेत्र में फैले पुरातात्त्विक अवशेषों को देखकर सहज ही इसके वैभवशाली अतीत का अनुमान लगाया जा सकता है। सिरपुर नामक नगर से शरभपुरीय शासक प्रवरराज तथा महासुदेवराज ने दानपत्र जारी किये थे किन्तु सर्वप्रथम इस स्थान को पाण्डुवंशीय (सोमवंशीय) शासकों ने अपनी सत्ता का केन्द्र बनाया और महाराज महाशिवगुप्त बालार्जुन (595–655ई.) के शासन काल से तो यह सम्पूर्ण दक्षिण कोसल क्षेत्र की राजधानी के रुप में विख्यात हो गया। सिरपुर की ओर सर्वप्रथम ध्यान आकृष्ट कराने का श्रेय पाश्चात्य विद्वान जे.डी. बेगलर (1873–74ई.) को दिया जाता है। उसके पश्चात्य सर अलेक्जेण्डर कनिंघम (1881–82 ई.) तथा ए. लौंगहर्स्ट (1909–10 ई.) भी सिरपुर के प्राथमिक अध्येताओं में परिगणित किए जाते हैं जिन्होंने सिरपुर की कला एवं पुरावशेषों की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया। सिरपुर की ओर, उत्खनन की दृष्टि से सर्वप्रथम प्रयास सागर विश्वविद्यालय के आचार्य स्व. मोरेश्वर गंगाधर राव दीक्षित के द्वारा किया गया। उन्होंने प्रथम बार सन् 1953–54 ई. में सागर विश्वविद्यालय की ओर से सिरपुर में उत्खनन कार्य का संचालन किया। तत्पश्चात् मध्य प्रदेश शासन पुरातत्त्व विभाग के विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी के रुप में उन्हीं के निर्देशन में सिरपुर का पुनः दो सत्रों 1954–55 तथा 1955–56 में उत्खनन सम्पादित हुआ। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के सेवानिवृत्त महानिदेशक श्री जगतपति जोशी एवं अधीक्षण पुरातत्त्वविद् श्री अरुण कुमार शर्मा महोदय ने सिरपुर में पुनः पुरातात्त्विक उत्खनन का कार्य प्रारम्भ किये, जो 1999 से 2011 के आस पास तक अनवरत चला।

सिरपुर का सांस्कृतिक अनुक्रम विद्वानों द्वारा निम्न क्रम में स्थापित किया गया है। **01. शरभपुरियाः** इस राजवंश के दो राजाओं (सुदेवराज एवं महाप्रवरराज) के दो अभिलेखों *एक कौआताल एवं दूसरा ठाकुरदिया* का उल्लेख प्राप्त होता है जो सिरपुर से जारी किए गये थे। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सिरपुर उनके आधिपत्य में

था और इनकी तिथि लगभग छठी शताब्दी ईस्वी मानी जाती है। **02. पाण्डुवंशीय अथवा सोमवंशीयः** शरभपुरियों के पश्चात् सिरपुर में सोमवंशियों का उल्लेख प्राप्त होता है। सर्वप्रथम इस स्थान को पाण्डुवंशीय (सोमवंशीय) शासकों ने अपनी सत्ता का केन्द्र बनाया और महाराज महाशिवगुप्त बालार्जुन (595–655ई.) के शासन काल से तो यह सम्पूर्ण दक्षिण कोसल क्षेत्र की राजधानी के रुप में विख्यात हो गया। इनकी तिथि लगभग सातवीं के प्रारम्भ से आठवीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्द्ध तक मानी जाती है। **03. कलचुरीः** पाण्डुवंशीय राजवंश के पराभव के बाद यह भू–भाग रतनपुर के कलचुरियों के अधीन आता है जिनकी संभावित तिथि लगभग दशवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से चौदहवीं शताब्दी तक माना जाता है।

सामान्य तौर पर सिरपुर की जो तिथि निर्धारित की गई है, उस कालखण्ड में विशेश रुप से मध्य भारत में लाल पात्र परम्परा का ही आधिपत्य दिखाई देता है। उत्तर गुप्त काल से लेकर प्रारम्भिक मध्य काल तक (काचित् पात्र परम्परा के आने तक) लगभग एक ही तरह की पात्र परम्परा चलती रहती है जिनका वर्गीकरण करना बहुत आसान नहीं है। वैसी ही स्थिति सिरपुर से प्राप्त पात्र परम्परा में भी दिखाई देती है। यहां से प्रमुख रुप से लाल रंग की पात्र परम्परा के साथ मध्यकालीन काले रंग के भी पात्र खण्ड भी प्राप्त होते है जिनका विवरण निम्नवत् हैं।

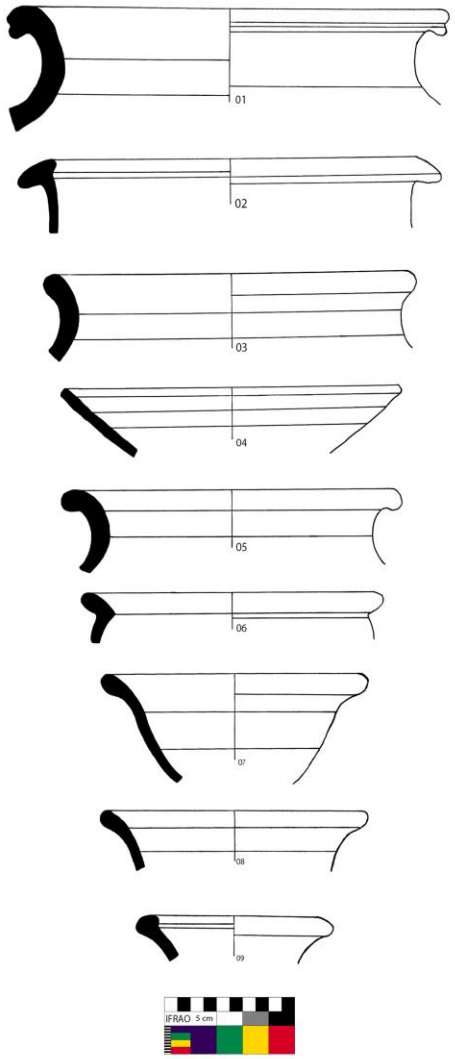

1. संग्रह पात्र का खण्डित भाग है जो लाल रंग की पात्र परम्परा का है, बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली है एवं रिम के बाहरी भाग में एक खॉच निर्मित है जिसके ठीक नीचे पूरे रिम में कट का निशान बना हुआ है। गर्दन के आन्तरिक भाग में समानान्तर दो क्षैतिज रेखाएं निर्मित है। यह मोटी गढ़न का पात्र है जो अच्छी तरह से पका है और जिसका अनुभाग लाल रंग का है।
2. हल्के काले रंग का संग्रह पात्र का खण्डित ऊपरी भाग है जो सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली हुई है, गर्दन के आन्तरिक ऊपरी भाग में एक हल्का उथला गड्ढा बना हुआ है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग हल्के काले रंग का है।
3. संग्रह पात्र खण्ड का ऊपरी भाग है जो हल्के लाल रंग का है। बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग हल्के लाल रंग का है।
4. लाल रंग की पात्र परम्परा का कटोरे का खण्डित ऊपरी भाग है। सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। रिम का ऊपरी भाग सपाट है। इसके निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग हल्के लाल रंग का है।
5. संग्रह पात्र खण्ड का ऊपरी भाग है जो लाल रंग का है। बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली है। इसके निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है।
6. लाल रंग की पात्र परम्परा का बेसिन का ऊपरी खडिण्त भाग है। बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली है। बाहरी तरफ रिम एवं स्कन्ध के सन्धि–स्थल पर एक हल्का सा खॉच बना हुआ है जबकि उसी जगह आन्तरिक भाग में एक उभार बना हुआ है। इसके निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है।
7. लाल रंग की पात्र परम्परा का गहरे कटोरे का खण्डित ऊपरी भाग है। सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। रिम भाग थोड़ा बाहर की तरफ मुड़ा हुआ है एवं आन्तरिक मध्य भाग में हल्का सा खॉच है। इसके निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग हल्के लाल रंग का है।
8. लाल रंग की पात्र परम्परा का घड़े का खण्डित ऊपरी भाग है जो सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली हुई है, एवं गर्दन का झुकाव भी हल्का बाहर की तरफ है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है।
9. लाल रंग की पात्र परम्परा का घड़े का खण्डित ऊपरी भाग है जो सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम लगभग सीधी है एवं रिम के अन्तः भाग में एक गहरा खॅच बना हुआ है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है। पात्र के बाहरी सतह पर कहीं–कहीं पर लाल स्लिप के प्रमाण प्राप्त हो रहे है।

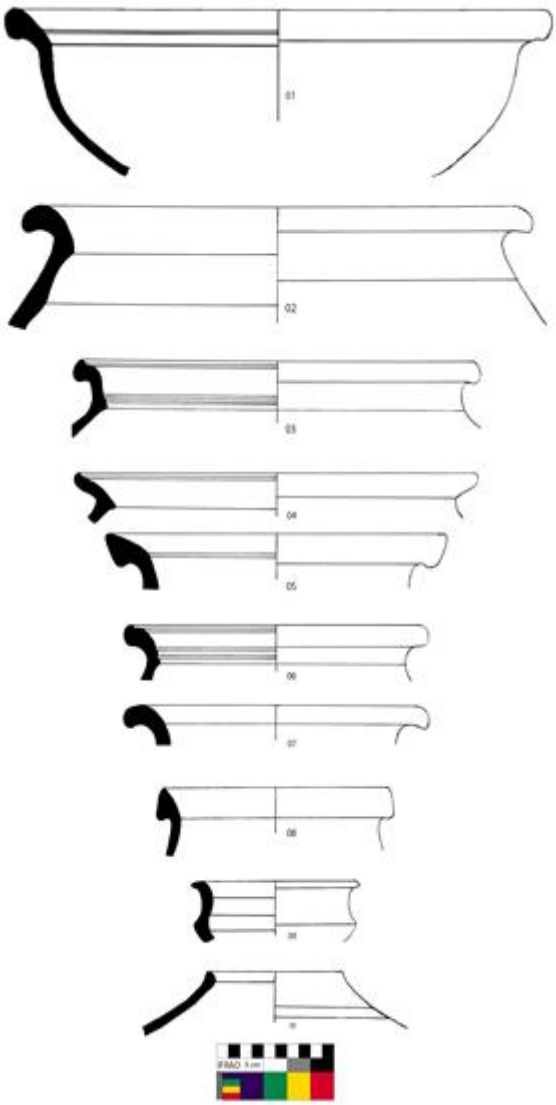

रेखाचित्र–02:

01. काले रंग की पात्र परम्परा का बेसिन का ऊपरी खडिण्त भाग है। बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। रिम का बाहरी भाग अवतल एवं बाहर की तरफ फैला है। बाहरी तरफ रिम एवं स्कन्ध के सन्धि–स्थल पर एक हल्का सा खॉच बना हुआ है जबकि उसी जगह आन्तरिक भाग में एक तीक्ष्ण उभार बना हुआ है। उभार के ऊपर दो समानान्तर क्षैतिज रेखाए निर्मित है। इसके निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में बालू के कण दिखते है। पात्र के आन्तरिक भाग में हल्के काले रंग के लेप का प्रयोग हुआ है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग हल्के काले रंग का है।
02. संग्रह पात्र का खण्डित ऊपरी भाग है जो लाल रंग की पात्र परम्परा का है, बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली है एवं रिम के बाहरी भाग में एक खॉच निर्मित है । गर्दन के आन्तरिक भाग में समानान्तर दो क्षैतिज उभार निर्मित है, एवं इनके मध्य में एक हल्का उथला गड्ढा बना हुआ है। यह मोटी गढ़न का पात्र है जो अच्छी तरह से पका है और जिसका अनुभाग लाल रंग का है।

03. लाल रंग की पात्र परम्परा से सम्बन्धित संग्रह का खण्डित ऊपरी भाग है जो अच्छी प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली हुई है एवं रिम के अन्तः भाग में एक तीक्ष्ण खॉच बना हुआ है, उसके बाद पुनः उभार है। उभार के नीचे दो समानान्तर क्षैतिज खॉच के बाद एक तीक्ष्ण उभार निर्मित है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह तेज गति के चाक पर निर्मित है। अच्छी तरह से पका हुआ, मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है। पात्र के बाहरी सतह पर चॉकलेट रंग की स्लिप के प्रमाण प्राप्त होते है।
04. लाल रंग की पात्र परम्परा का घड़े का खण्डित ऊपरी भाग है जो सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम का ऊपरी भाग हल्का सा बाहर की तरफ फैलकर अन्दर की ओर मुड़ा हुआ है। रिम के आन्तरिक ऊपरी भाग में एक हल्का सा खॉच बना हुआ है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग हल्का लाल रंग का है।
05. संग्रह पात्र का खण्डित ऊपरी भाग है जो लाल रंग की पात्र परम्परा का है, बालू मिश्रित मध्यम प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से, मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली है एवं बाहरी तरफ रिम एवं स्कन्ध के सन्धि–स्थल पर एक हल्का सा खॉच बना हुआ है । अच्छी तरह से पका हुआ यह मोटी गढ़न का पात्र है। इसका अनुभाग लाल रंग का है।
06. लाल रंग की पात्र परम्परा का घड़े का खण्डित ऊपरी भाग है जो सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम थोड़ा बाहर की तरफ फैली है। रिम के अन्तः भाग में ऊपर एक तीक्ष्ण खॉच बना हुआ है, उसके बाद पुनः उभार है। उभार के नीचे दो समानान्तर क्षैतिज खॉच के बाद एक तीक्ष्ण उभार निर्मित है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है। पात्र के बाहरी सतह पर कहीं–कहीं पर लाल स्लिप के प्रमाण प्राप्त हो रहे है।
07. खण्डित घड़े का ऊपरी भाग है जो लाल रंग की पात्र परम्परा का है। सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम बाहर की तरफ फैली हुई है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग मध्य में हल्के काले रंग का है।
08. लाल रंग की पात्र परम्परा का घड़े का खण्डित ऊपरी भाग है। सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम हल्का सा बाहर की तरफ फैली हुई है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। सामान्य प्रकार से पकी, मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है।
09. लाल रंग की पात्र परम्परा का, लघु कोखदार हांडी का खण्डित ऊपरी भाग है। सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसकी रिम हल्का सा बाहर की तरफ फैली हुई है। स्कन्ध एवं बाडी के मध्य में एक तीक्ष्ण उभार है। यह तेज गति के चाक पर निर्मित है। अच्छी प्रकार से पकी, पतली गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है।
10. खण्डित रिम विहीन हांडी का ऊपरी भाग है जो लाल रंग की पात्र परम्परा का है। सामान्य प्रकार से तैयार की गई मिट्टी से निर्मित है। इसके मिट्टी में कुछ महीन बालू के कण दिखते है और यह मध्यम गति के चाक पर निर्मित है। मध्यम गढ़न का पात्र खण्ड है एवं इसका अनुभाग लाल रंग का है।

सिरपुर उत्खनन से प्राप्त पात्रों के निर्माण में आस–पास में उपलब्ध मिट्टी का ही प्रयोग किया गया है जिसमें बालू मिश्रण भी हुआ है। प्राप्त पात्र खण्डों में अधिकांशतः विभिन्न आकार–प्रकार के संग्रह पात्र, घड़े, बेसिन, हांडी, कटोरे आदि प्रमुख है। इनके अध्ययन से यह आभासित होता है कि संग्रह के लिए पात्रों का प्रयोग ज्यादा होता था। जिसमें संभवतः तरल एवं ठोस पदार्थों का संग्रह किया जाता रहा होगा। बहुत स्पश्ट जानकारी इसलिए उपलब्ध नहीं है क्योंकि इन पात्र खण्डों का वैज्ञानिक अध्ययन अभी भी शेश है।

फलकः 01

फलकः 02

सन्दर्भ

1. महाशिवगुप्त बालार्जुन का मल्हार से प्राप्त ताम्रपत्र लेख, एवं जैन, बालचन्द्र द्वारा सम्पादित उत्कीर्ण लेख, संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन–2006, पृष्ठ संख्या–44–45
2. बाजपेयी, शिवाकान्त, सिरपुर–पुरातत्त्व एवं पर्यटन, शताक्षी प्रकाशन रायपुर–2005, पृष्ठ संख्या–12–13 एवं जोशी, जगतपति एवं शर्मा, ए.के., एक्सकेवेशन एट सिरपुर, डिस्ट्रिक्ट महासमुन्द, पुरातत्त्व अंक 30, नई दिल्ली,1999–2000, पृष्ठ संख्या–110–116.
3. सिरपुर –महेशचन्द्र श्रीवास्तव, भोपाल 1984
4. एक्सकेवेशन एट सिरपुर, छत्तीसगढ़ स्पेशल रिपोर्ट नं. 1, 2007–ए.के. शर्मा